विश्व शान्ति का आधार आध्यात्मिकता

विश्व शांति की कल्पना आज हर एक मनुष्य के अन्तर्मन की पुकार है। सुख और समृद्धि का आधार शान्ति है। हर जगह अशांति एवं अशांति के सगे-सम्बन्धियों रूपी बुराईयों की बाढ़ है। कोई व्यक्ति कितना भी बुरा क्यों न हो, लेकिन वह एक ऐसी शांति की कामना करता है जहाँ उसे सच्चा सुकून मिल सके। शान्ति एक ऐसा शस्त्र है जिससे किसी भी युद्ध को जीता जा सकता है। अतीत में हमारे देश में एक ऐसी शान्ति का समय था जिसकी कल्पना आज तक की जाती है। और उनकी साया देखकर उसपर चलने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है। मजबूरी यह है कि लोग अशांति छोड़ना नहीं चाहते और शांति को पाना चाहते है। यह कैसे सम्भव है? शान्ति की खोज में मनुष्य जाने क्या-क्या जतन कर रहा है उसके बाद भी कोई आशा की किरण नजर नहीं आ रही है।

वास्तव में शांन्ति एक ऐसा प्रकाशपुंज है जिसके उजाले में मनुष्य अपने अन्तर्जगत का अवलोकन कर सकता है तथा एक सच्चे, सुखदायी, परोपकारी पथ का चन कर सकता है। मनुष्य की आन्तरिक शांति की शक्ति एक ऐसे मंच का निर्माण करती है जहाँ से पूरे विश्व को देखा जा सकता है। इतिहास साक्ष्ज्ञी है कि शांति ढूंढ़ना कोई कठिन कार्य नहीं है। बहुत से लोगों ने इसका पथ अपनया है जिसकी स्मृति आज भी विश्व को आलोकित कर रही है। महापुरूष अथवा दिव्य पुरूष कोई सीधो आसमान से नहीं टपकता है। बल्कि वह इस संसार सागर से हीरे मोती चुंगकर शान्ति का संचयन करता है और वही शांति एक दिव्य प्रकाा के रूप में पूरे जहान को प्रकाशमान करती है।

असल में आज जिस दौर से संसार का हर आदमी गुजर रहाहै उसके लिए यहा सोच पाना भी कठिन है कि विश्व शांति हो सकती है। इसका कारण यही है कि उसको भौतिकता के ताम्रयुग में जितना बाह्य जगत में ढूढ़ने की कोशिश की है कुछ क्षण के लिए उसे अल्पकालिक शांन्ति की अनुभूति तो हुई है, परन्तु वचह अधूरी शांति होने के कारण उसकों सच्ची शांति पाने की ललक को बढ़ा दिया है। यही कारण है कि मनुष्य शांति की खोज में विलासिता के अवाई संचार में डूबने लगा है। कई बार तो ऐसे देखने को मिलता है कि लोग शांति की खोज में भौतिकता के संसार में अशांति के जाल में इतना फंस जाते है कि शांति की प्राप्ति आत्महत्या में ढूढ़ते है।

वास्तव में आज अशांति का कारण नैतिक मूल्यों का पतन है। जिस तरह से कोई पेड़ कितना भी हरा-भरा क्यों न हो, लेकिन जड़ में दीमक लग जाने से सूखने लगता है। कितना उर्वरक, पानी और वातावरणीी उपलब्ध हो परन्तु वह सूख जाता है। इसी तहर से मनुष्य ने सब सुख और शान्ति के भौतिक साधन तो इकट्ठे किये है लेकिन बुरईयों के कीड़ों ने अन्दर से खोखला बना दियाहै । प्रेम, शान्ति, पवित्रता को समाप्त कर दिया है। हर कए मनुष्य शांति का इच्छुक है। धर्म सत्ता, राज सत्ता और न्या सत्ता के लोगों के अन्दरीी यह कीड़े पूरी तहर सक्रिय है इसलिए शांति के प्रयास भी असफल हो रहे हैं। अब चारों तरफ से निराश इन सभी सत्ताओं की दृष्टि आध्यात्मिकता की ओर टीकी है जिसके अन्तर्गत अनेक प्रयास हो रहे है।

बेशक आध्यात्मिकता हर तरफ बढ़ी है परन्तु उसका स्वरूप बदला है। आडम्बर और दिखावे में तब्दील हुई। वास्तविकता को छोड़ कर्मकाण्ड में लगा होने के कारण उसकी पूर्ण प्राप्ति नहीं हो रही है। फिल्मी जगत ने भी इसका सहारा लेना शुरू किया है परन्तु उसमें स्वरूप का परिवर्तन होने के कारण उसमें

भी भ्रष्टाचार की बदबू आने लगी है।

वास्तव में विश्व शांति का हल आध्यात्मिकता में लिपटा हुआ है। आध्यात्मिकता मानव और मानवीयता की पहचान कराती है। आध्यात्मिकता सच्चे पथ का अनुगामी बनाती है। आत्म विश्लेषण, आत्मनिरीक्षण और आन्तरिक शांति का पुंज प्रदान करती है। ऊंच, नीच का भेदभाव समाप्त करती है, जिससे दैवी गुणों का संचार होता है। समान दृष्टिकोण विकसित होने के कारण सहयोग, एकता, विश्व वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को बल मिलता है। परोपकार, नि:स्वार्थ स्नेह, आत्मिक प्यार तथा एकता के सूत्र में पिरोने का सम्बल प्रदान करता है। आत्मिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में आध्यात्मिकता की बहुत बड़ी भूमिका है। आध्यात्मिकता आत्म उन्नति की सीढ़ी है। आध्यात्मिकता के पथ का राही बनकर परमात्मा के सानिध्य का अनुभव कर सकते हैं, तथा परमात्म शक्तियों के अधिकारी बन सकते है। इस पथ के पथिक में प्रेम, एकता, पवित्रता, खुशी, संतुष्टता तथा दैवी गुणों का उदय होता है और वह शनै: शनै: देवत्व स्थिति की ओर अग्रसर होता है।

सभी मनुष्यत्माओं को अब पूर्ण रूप से एहसास हो जाना चाहिए कि हर परिस्थिति में परमात्म शक्ति और आध्यात्मिकता की शक्ति के अलावा कोई मददगार नहीं हो सकता। प्राकृतिक आपदाओं, भूकम्प, बाढ़ के रूप में तबाही का मंजर सामने आया है जिससे लोग केवल ईश्वरीय शक्ति के पुकार के अलावा कोई चारा नहीं दिखा। सर्वकल्याणकारी परमात्मा शिव की हम दिव्य संतान है। हमें उनके द्वारा बताये गये दिव्य कार्मे की शिक्षाओं पर चलने स सर्व मानव जाति का कल्याण हो सकता है और विश्व में शान्ति हो सकती है। परमात्मा का हम बच्चों के प्रति यही संदेश है कि प्रेम, आनन्द, खुशी, पवित्रता, मधुरता, एकता यह आत्मा के निजी धरोहर है। इसे दूर होना ही दु:ख को निमंत्रण देना है। दु:ख से दूर रहने के लिए इन आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाते रहिए। इच्छायें मनुष्य को कभी अच्छा नही बनने देती, इसलिए इच्छाओं को त्याग इच्छा मात्रम अविद्या बनिये।

इच्छायें तो हो परन्तु ऐसी इच्छा हो जिसमें स्व-कल्याण के साथ-साथ विश्व कल्याण का संदेश छिपा हो। मनुष्य वही सार्थक और वन्दनीय है जो अपने कल्याण के साथ दूसरों के कल्याण के बारे में भी सोचता है। ईश्वर भी उसका गुणगान करता है। ईश्वरीय शक्तियां उसे मदद करने लगती है और वह देव तुल्य हो जाता है। फिर वह पूज्यनीय हो जाता है। विकारी, अहंकारी मनुष्य कभी भी शान्त स्वरूप नही बन सकता। विश्व शांति हर एक-एक के सकारात्मक प्रयास से हो सकती है। हर एक मनुष्य अपने अन्दर शान्ति को स्थापित करे। इसकी आभा से ही दूसरों को भी शान्ति स्थापित करने में मदद मिलेगी। इसी तरह विश्व शान्ति की ओर अग्रसर होगा। परमपिता परमात्मा शिव का अवतरण विश्व शांति के लिए ही होता है। उनका यही संदेश है कि स्व की शांति में ही विश्व शांति निहित है। इसलिए आईये चलिए हम भी विश्व शान्ति की शुरूआत स्वयं से करें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com